संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

वर्ष : १२३ ● अंक-२२ ● २८ मई २०१६ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष नवमी संवत् २०७६ ● दयानन्दाब्द १६६ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३१२०

प्रचण्ड बहुमत पाने पर तथा पुनः श्री नरेन्द्र मोदी जी को प्रधानमंत्री बनने पर हार्दिक शुभकामनायें

–डॉ० धीरज सिंह, सभा प्रधान

भाजपा ने उत्तर प्रदेश में विपक्ष द्वारा रचे गए मजबूत चक्रव्यूह को छिन्न–भिन्न करके जिस तरह करीब तीन चौथाई सीटों पर कब्जा किया, उससे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह कथन सही साबित हो गया कि महागठबंधन के खिलाफ जनता खुद चुनाव लड़ रही है। भाजपा ने २०१४ का लोकसभा चुनाव नरेंद्र मोदी की गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में उभरे हिंदुत्ववादी नेता की छवि आधारित पृष्ठभूमि को लहर बनाकर जीता था, इस बार परिस्थितियां कतई भिन्न और चुनौतीपूर्ण थीं। भावनात्मक वोट बैंक राजनीति में दक्ष सपा और बसपा ने करीब ढाई दशक पुरनी कटुता भूलकर गठबंधन किया तो एक बार राजनीति पंडित भी चकरा गए। उत्तर प्रदेश में इस गठबंधन के कारण मतदान के बाद भी चुनाव विशेषज्ञ हालात का आकलन करने में संकोच कर रहे थे यद्यपि परिणाम से जाहिर हो गया कि दुविधा सिर्फ विशेषज्ञों मन में थी, मतदाताओं के मन में नहीं। उत्तर प्रदेश के चुनाव परिणाम देश के अन्य अधिकतर राज्यों जैसे ही रहे। इन्हें इस मायने में खास माना जाएगा कि भाजपा ने सपा–बसपा के मजबूत नजर आ रहे गठबंधन का मोदी–योगी जोड़ी के प्रभाव के सामने असरहीन साबित कर दिया। नतीजों से प्रतीत होता है, मानो मतदाताओं ने परिवारवाद, जातिवाद और धार्मिक तुष्टीकरण की राजनीति का खात्मा करने के लिए मतदान किया। चुनाव नतीजों से संकेत भी मिल रहा है कि हर अंचल, वर्ग और आयु के मतदाताओं में राष्ट्रवाद का ज्वार उफान ले रहा था। विपक्षी दलों ने बेसहारा पशुओं की समस्या से लेकर कई अन्य संकीर्ण मुद्दों को खूब हवा दी,

पर मतदाताओं ने छोटी–मोटी और व्यक्तिगत समस्याओं से ऊपर उठकर राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर मतदान किया।

शुभ लक्षण है कि यह चेतना महानगरों से लेकर गांव–टोलों और मजरों तक नजर आई। इस चुनाव का सर्वाधिक उज्जवल पक्ष है कि राजनीति तमाम संकीर्णताओं से मुक्त होकर विकास के एजेंडे पर वापस लौटी। इसे युवा मतदाताओं का प्रभाव भी माना जा सकता है। मतदाताओं खासकर निर्बल आर्यवर्ग के केंद्र और राज्य सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं की जिस तरह मतदान का आधार बनाया, उसके दूरगामी नतीजे आना तय है। आशा है श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश प्रगति पथ पर अग्रसर होगा। आर्य प्रतिनिधि सभा परिवार की ओर से भारतीय जनता पार्टी को प्रचण्ड बहुमत मिलने पर तथा मोदी जी को पुनः प्रधानमंत्री बनने पर हार्दिक शुभकामनाऐं।

चरित्र निर्माण सर्वोपरि सम्पत्ति है

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, सभा मंत्री

गढ़मुक्तेश्वर २१ मई- चरित्र निर्माण हमारी सर्वोत्तम सम्पत्ति है दुनिया की सारी सम्पत्तियां चरित्र से छोटी पड़ती हैं ये विचार गंगा किनारे गुरूकुल पूठ में चल रहे चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर में स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० आर्यों वीरों को प्रातः यज्ञशाला में यज्ञ के पश्चात् व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने बताया कि मूर्ख विद्वान से डरता है कमाजोर बलवान से डरता है और गरीब धनवानू से डरता है लेकिन चरित्रवानू से सभी डरते हैं अतः चरित्र सबसे बड़ी सम्पत्ति और ऊर्जा है हमें निर्भयता प्रदान करता है लोगों का विश्वास उसके ऊपर सदैव स्थाई रूप में रहता है स्वास्थ्य विद्या बल वैभव सम्मान इस चरित्र से प्राप्त होते हैं स्वामी जी ने बताया कि यदि हमारा धन चला गया तो कुछ नहीं गया और यदि स्वास्थ्य चला गया तो कुछ चला गया और यदि चरित्र चला गया तो हमारा सब कुछ चला गया ऐसी अंग्रेजी में कहावत है। जीवन के प्रथम चरण अर्थात् बाल्य अवस्था में ही इन अच्छे सुन्दर विचार संस्कारों को संगृहीत करने का अवसर है बाद में चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पाओगे। फिर पछताये क्या होते है जब चिड़ियाँ चुग गई खेत इसलिए इस शिविर से संकल्प लेकर जाओ स्वामी जी ने यज्ञ में सभी से संकल्प कराकर बुराईयों छोड़ने के लिए आहुतियाँ दिलाईं। शिविर प्रातः चार बजे से प्रारम्भ होता है पाँच बजे से योगासन, प्राणायाम, व्यायाम, आसन, स्तूप, दण्ड, बैठक सामूहिक रूप से सिखाये गए जुड़ो कराँटे के अभ्यास भी सिखाये गए नेत्रों की बीमारी न हो नजला, जुकाम, खाँसी न हो जोड़ों में दर्द न हो उसके लिए प्राणायाम और शीर्षसन, सर्वांगासन, वृक्षासन, ताड़ासन आदि सूर्य नमस्कार के अभ्यास सिखाये गए। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा हापुड़ के तत्त्वावधान में यह शिविर १६ मई से चल रहा है इसका समापन २ जून को को होगा। जिलाध्यक्ष सुरेन्द्र सिंह एवं मन्त्री सुन्दरलाल आर्य कोषाध्यक्ष, रवीन्द्र उत्साही, शिविर संयोजक, अशोक आर्य पिलखुवा ने सभी को सादर आमन्त्रित किया है। इस शिविर में जिले के बाहर से भी आर्यवीर आये हुए हैं दिन में बौद्धिक शिक्षा दी जाती है सायंकाल खेल-कूद एवं आत्मरक्षा के साधन सिखाये जाते हैं रात्रि में भोजन के पश्चात् सामूहिक मनोरंजन का भी कार्यक्रम रहता है। सभी आर्य वीर प्रसन्न और उत्साहित हैं आचार्य दिनेश एवं राजीव प्राचार्य जी महेश आर्य स्वामी अखिलानन्द जी सभी व्यवस्थाओं को देख रहे हैं। संस्कृत सम्भाषण प्रशिक्षण कर भी १ घण्टा दिनचर्या में जोड़ा गया है छात्र आपस में मिलजुलकर सहयोग करने का अभ्यास सीख रहे हैं आवसीय शिविर में तपस्वी बनने का अभ्यास भी कराया जा रहा है।

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

प्रचण्ड बहुमत के साथ मोदी सरकार

गुरूवार को आए चुनावी नतीजे भारतीय लोकतंत्र के लिए काफी अहम हैं। नरेंद्र मोदी, उनका राष्ट्रवाद और भाजपा अब केन्द्र में एकछत्र शासन कर सकने की स्थिति में है। कांग्रेसवाद और क्षेत्रवाद, दोनों का एक साथ पतन हुआ हैं बेशक कभी इंदिरा गंधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस के लिए कहा जाता था कि वह 'टीना' फैक्टर यानी' देअर इज नो अल्टरनेटिव टु इंदिरा गांधी' के कारण बार–बार जीतकर आती है, लेकिन अब लगभग तीन दशक की गठबंधन राजनीति को नकारता हुआ 'टीमो' (देअर इज मोदी ओनली) फैक्टर भारतीय राजनीति में मजबूती से स्थापित हो गया है। इन नतीजों ने राज्यों में क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन बन सकने की संभावना को भी खत्म कर दिया है, क्योंकि क्षेत्रीयवाद दलों और कांग्रेस को मिलाकर ६० के दशक में २०० से भी अधिक सीटें आती रही हैं।

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की इस जीत के सूत्रधार भाजपा अध्यक्ष अमित शाह हैं। उन्होंने कई राज्यों में अहम गठजोड़ किए। असम से असम परिषद और बोडो पीपुल्स फ्रंट, बिहार में जद (यू) पंजाब में शिरोमणि अकाली दल, महाराष्ट्र में शिव सेना, तमिलनाडु में अन्नाद्रमुक और उत्तर प्रदेश में अपना दल व निषाद पार्टी जैसे दलों को अपने कुनबे में शामिल किया।

यह सही है कि आम चुनाव से ठीक पहले हुए तीन प्रमुख हिंदी भाषी राज्यों (राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़) के विधानसभा चुनावों में भाजपा को हार का सामान करना पड़ा था। इससे पहले गुजरात में भी उसका प्रदर्शन अच्छा नहीं माना गया था। चर्चा यह भी थी कि जीएसटी की उलझन में व्यापारी वर्ग उलझ गया है और कृषि संकट किसानों की मुश्किलें बढ़ा रहा है। फिर इन राज्यों में भाजपा को सीधे कांग्रेस से भी टकराना था, जो हालिया जीत की वजह से आत्मविश्वास से भरी थी। लेकिन ये तामम चुनौतियां मोदी सरकार के कुछ कदमों के कारण ध्वस्त हो गई। राजनतिक पर्यवेक्षक मानते हैं कि प्रधानमंत्री की 'होमडिलेवरी पॉलिटिक्स' के कारण यह संभव हो सका है। इसके तहत गरीबों के दरवाजे पर शौचालय भी पहुंचे और गैस सिलेंडर भी। किसानी में लगी आग को बुझाने के लिए मोदी सरकार ने आम बजट में किसान सम्मान निधि की घोषणा की और बिना देर किए सबके बैंक खाते में दो–दो हजार रूपये की पहली किस्त जमा की। नतीजन, जमीन पर नरेंन्द्र मोदी के नाम पर कोई विशेष विरोध न रहा, जबकि मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस अपनी हालिया जीत के बाद शिथिल पड़ गई। फिर, अशोक गहलौत व सचिन पायलट के आपसी झगड़े और कमलनाथ माधवराव सिंधिया व दिग्विजय में सामंजस की कमी जैसे कारणों से वह मोदी की आक्रमणकारी रणनीति का काट भी नहीं खोज सकी।

इन नतीजों से सबसे आश्चर्य जनक पहलू है, देश के पूर्व और पर्वोत्तर में पहली बार कमल का छा जाना। पूर्वोत्तर के सभी राज्यों, खासतौर से असम में, और पश्चिम बंगाल और ओडिशा में जबर्दस्त मोदी लहर दिखी है। पूर्वोत्तर को प्रधानमंत्री पहले ही 'हीरा' देने का ऐलान कर चुके हैं। 'हीरा' के 'ह' यानी हाईवे, आई यानी इंटरनेट, आर यानी रेलवे और ए यानी एयर कनेक्टिविटी या हवाई सेवा है। हालांकि राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर (एनआसी) को लेकर पिछले वर्ष यहां केन्द्र सरकार का जमकर विरोध हुआ था, लेकिन हेमंत बिस्वा शर्मा की मेहनत और असम गण परिषद व बोडो पीपुल्स फ्रंट के साथ गठबंधन का पूरा फायदा भाजपा को मिलता दिखा है। और कांग्रेस की पूरी राजनीति कहीं न कहीं बदरूद्दीन अजमल की ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट के साथ तालमेल करके चलती रही है। मगर भाजपा ने न सिर्फ इसमें सेंध लगाई, बल्कि चाय बगान के मजदूरों के बची भी उसने जमकर काम किया जिसके कारण आज बहुमत के आकड़े से भी पार हो गयी और भारी मतों से विजयी बनी। – सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ नवमसमुल्लासारम्भः

अथ विद्याऽविद्याबन्धमोक्षविषयान् व्याख्यास्यामः

दूसरा 'सम्बन्ध' ब्रह्म की प्राप्ति रूप मुक्ति प्रतिपाद्य और वेदादि शास्त्र प्रतिपादक को यथावत् समझ कर अन्वित करना।

तीसरा 'विषयी' सब शास्त्रों का प्रतिपादन विषय ब्रह्म उस की प्राप्तिरूप विषय वाले पुरुष का नाम विषयी है।

चौथा 'प्रयोजन' सब दुःखों की निवृत्ति और परमानन्द को प्राप्त होकर मुक्ति सुख का होना। ये चार अनुबन्ध कहाते हैं।

तदनन्तर 'श्रवणचतुष्टय' एक 'श्रवण' जब कोई विद्वान् उपदेश करे तब शान्त, ध्यान देकर सुनना, विशेष ब्रह्मविद्या के सुनने में अत्यन्त ध्यान देना चाहिये कि यह सब विद्याओं में सूक्ष्म विद्या है। सुन कर दूसरा 'मनन' एकान्त देश में बैठ के सुने हुए का विचार करना। जिस बात में शंका हो पुनः पूछना और सुनते समय भी वक्ता और श्रोता उचित समझें तो पूछना और समाधान करना। तीसरा 'निदिध्यासन' जब सुनने और मनन करने से निसन्देह हो जाय तब समाधिस्थ हो कर उस बात को देखना। चौथा 'साक्षत्कार अर्थात् जैसा पदार्थ का स्वरूप गुण और स्वभाव हो वैसा याथातथ्य जान लेना ही 'श्रवणचतष्टय' कहाता है।

सदा तमोगुण अर्थात् क्रोध, मलीनता, आलस्य, प्रमाद आदि, रजोगुण अर्थात् ईर्ष्या, द्वेष, काम, अभिमान, विक्षेप आदि दोषों से अलग होके सत्त्व अर्थात् शान्त प्रकृति, पवित्रता, विद्या, विचार आदि गुणों को धारण करे।

(मैत्री) सुखी जनों में मित्रता, (करूणा) दुःखी जनों पर दया, (मुदिता) पुण्यात्माओं से हर्षित होना, (उपेक्षा) दुष्टात्माओं में न प्रीति और न वैर करना।

नित्यप्रति न्यून ने न्यून दो घण्टा पर्यन्त मुमुक्षु ध्यान अवश्यक करे जिससे भीतर के मन आदि पदार्थ साक्षात् हों।

देखो! अपने चेतनस्वरूप हैं इसी से ज्ञानस्वरूप और मन के साक्षी हैं क्योंकि जब मन शान्त, चंचल, आनन्दित वा विषादयुक्त होता है उसको यथावत् देखते हैं, वैसे ही इन्द्रियां प्राण आदि का ज्ञाता, पूर्वदृष्ट का स्मरणकर्त्ता और एक काल में अनेक पदार्थों के वेत्ता, धारणाकर्षणकर्त्ता और सब से पृथक हैं। जो पृथक न होते तो स्वतन्त्र कर्त्ता इनके प्रेरक अधिष्ठाता कभी नहीं हो सकते।

अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः।–योगेशास्त्रे पादे २। सू० ३।।

इनमें से अविद्या का स्वरूप कह आये। पृथक् वर्त्तमान बुद्धि को आत्मा से भिन्न न समझना अस्मिता, सुख में प्रीति राग, दुःख में अप्रीति द्वेष और सब प्राणिमात्र को यह इच्छा सदा रहती है कि 'मैं सदा शीररस्थ रहूँ, मरूँ नहीं, मृत्यु दुःख से त्रास अभिनिवेश कहाता है। इन पांच क्लेशों को योगाभ्यास विज्ञान से छुड़ा के ब्रह्म को प्राप्त होके मुक्ति के परमानन्द को भोगना चाहिये।

प्रश्न- जैसी मुक्ति आप मानते हैं वैसी अन्य कोई नहीं मानता, देखा! जैनी लोग मोक्षशिला, शिवपुर में जाके चुपचाप बैठे रहना, ईसाई चौथा आसमान जिसमें विवाह लड़ाई बाजे गाजे वस्त्रादि धारण से आनन्द भोगना, वैसे ही मुसलमान सातवें आसमान, वाममार्गी श्रीपुर, शैव कैलाश, वैष्णव वैकुण्ठ और गोकुलिये गोसाईं गोलोक आदि में जाके उत्तम स्त्री, अन्न, पान, वस्त्र, स्थान आदि को प्राप्त होकर आनन्द में रहने को मुक्ति मानते हैं। पौराणिक लोग (सालोक्य) ईश्वर के लोक में निवास, (सानुज्य) छोटे भाई के सदृश ईश्वर के साथ रहना, (सारूप्य) जैसी उपासनीय देव की आकृति है वैसा बन जाना, (सामीप्य) सेवक के समान ईश्वर के समीप रहना, (सायुज्य) ईश्वर से संयुक्त हो जाना ये चार प्रकार की मुक्ति मानते हैं। वेदान्ती लोग ब्रह्म में लय होने को मोक्ष समझते हैं।

(उत्तर) जैनी (१२) बारहवें, ईसाई (१३) तेरहवें और चौदहवें समुल्लास में मुसलमानों की मुक्ति आदि विषय विशेष कर लिखेंगे। जो वाममार्गी श्रीपुर में जाकर लक्ष्मी के सदृश स्त्रियाँ, मद्य मांसादि खाना पीना रंग राग भोग करना मानते हैं वह यहाँ से कुछ विशेष नहीं। वैसे ही शैव तथा वैष्णवों का महादेव और विष्णु के सदृश आकृति वाले पार्वती और लक्ष्मी के सदृश स्त्रीयुक्त होकर आनन्द भोगना, यहां के धनाढ्य राजाओं से अधिक इतना ही लिखते हैं कि वहां रोग न होंगे और युवावस्था सदा रहेगी। यह उन की बात मिथ्या है क्योंकि यहां भोग वहां रोग और जहां रोग वहां वृद्धावस्था अवश्य होती है।

और पौराणिकों से पूछना चाहिये कि जैसी तुम्हारी चार प्रकार की मुक्ति है वैसी तो कृमि, कीट, पतंग, पश्वादिकों को भी स्वतः सिद्ध प्राप्त है, क्योंकि ये जितने लोक हैं वे सब ईश्वर के हैं। इन्हीं में सब जीव रहते हैं इसलिये 'सालोक्य' मुक्ति अनायास प्राप्त है। 'सामीप्य' ईश्वर सर्वत्र व्याप्त होने से सब उसके समीप हैं इसलिये 'सामीप्य' मुक्ति भी स्वतः सिद्ध है। 'सानुज्य' जीव ईश्वर से सब प्रकार छोटा और चेतन होने से स्वतः बन्धुवत् है इससे 'सानुज्य' मुक्ति भी बिना प्रयत्न के सिद्ध है। और सब जीव सर्वव्यापक परमात्मा में व्याप्य होने से संयुक्त हैं इससे 'सायुज्य' मुक्ति भी स्वतः सिद्ध है।

क्रमशः

माँसाहार छोड़ें- शाकाहार अपनाएँ : आखिर क्यों?

–डॉ० सुरेन्द्र सिंह कादियाण

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी माँसाहार के सम्बन्ध में फैली सभी मिथ्या धारणओं को खण्डित कर देते हैं क्योंकि वे आजीवन शाकाहारी रहे और शक्ति प्रदर्शन द्वारा इसकी श्रेष्ठता सिद्ध करते रहे। जालन्धर में एकबार उन्होंने दो घोड़ों की बग्गी को एक हाथ से पकड़ कर रोक लिया। घोड़ों के पूरा बल लगाने पर भी बग्गी टस से मस नहीं हुई। एक बार एक रहट को हाथ से खींच कर हौज को भर दिया। जब इससे भी उनकी कसरत पूरी नहीं हुई तो कई कोस की दौड़ लगाई। एकबार अनेक कश्मीरी पलवानों की उपस्थिति में उन्होंने अपने व्याख्यान में घोषणा कर दी कि मेरी आयु ५० वर्ष से अधिक है, आप में से कौन शक्तिशाली है जो मेरे इस खड़े हु हाथ को झुका दे। किसी भी पहलवान की हिम्मत इस चुनौती को स्वीकार करने की नहीं हुई। एक बार किसी अन्य अवसर पर कुछ पहलवानों ने उनका शक्ति परीक्षण करना चाहा। उनके विचारों को भांप कर स्वामी जी ने अपनी गीली कौपीन निचोड़ कर उन्हें देते हुए कहा कि इसे निचोड़ कर एक बूंद जल निकाल कर दिखा दो। कोई भी पहलवान पूरा जोर लगा कर उस कौपीन से एक बूंद जल नहीं निकाल सका। तदनन्तर उनसे कौपीन लेकर स्वामी जी ने पुनः उसे निचोड़ कर जल निकाल कर दिखा गया।

भारत के प्रसिद्ध पहलवान प्रो. राममूर्ति ने जो विशुद्ध शाकाहारी थे यूरोप के माँसाहारी पहलवानों को कई बार धूल चटाई। भारत के पहलवान जो माँस खाते हैं वे दूध, घी, बादाम का भी बराबर सेवन करते हैं। दिग्विजयी भारतीय पहलवान गागा ऐसा ही था। किन्तु रुस्तमे जहाँ गामा पहलवान दिल्ली छावनी के निकट बसे नारायण गाँव के पहलवान भगवानदास को नहीं हरा सका जो पूर्णतया शाकाहारी था। उनकी कुश्ती बराबरी पर छूटी थी। गामा महाराज पटियाला के पहलवान थे तो भगवानदास महाराजा कोल्हापुर के। भगवानदास शाकाहारी ही नहीं, सदाचारी, सरल प्रकृति का छह फुटा अत्यन्त सुन्दर, स्वस्थ, सुदृढ़, सुडौल, बलिष्ठ पहलवान था जो आजीवन ब्रह्मचारी रहा। उसके बारे में प्रसिद्ध है कि उसने चूना पीसने वाली पत्थर की चक्की में बैलों की जगह खुद जुट कर अपनी पक्की हवेली के लिए चूना पीसा था। भारत में उसकी जोड़ के दो–चार पहलवान ही थे। हैदराबाद के नवाब मीर उस्मान अली का प्रसिद्ध पहलवान था जिसका नाम अली था जो प्रतिदिन दो बकरों का शोरबा लेता था। नवाब ने एक बार अली और भगवानदास के बीच कुश्ती तय कर दी और तैयारी के लिए दो महीने का समय दे दिया। नियत समय पर कुश्ती प्रारम्भ हुई। कुश्ती प्वाईंट पर नहीं चित्त करने पर जीती जाती थी। अर्थात् पीठ जमीन पर और छाती आसमान की ओर स्थिर करके कुश्ती जीती जाती थी, दोनों के बीच लगभग ढाई घंटे कुश्ती हुई, अली थकने व हांफने लगा और अतं में बेहोश होकर गिर पड़ा। शाकाहारी की जीत हुई।

भगवान दास की बहन के बारे में भी एक दिलचस्प किस्सा आज भी गाँव देहात में प्रचलित है। उसकी बहन को उसकी ससुराल वाले काफी तंग रखते थे, गाली–गलौज तक दे देते थे, पति महोदय उस पर हाथ भी उठा चुके थे लेकिन अपने संयम, सहनशीलता, लज्जा व शर्म के कारण वह कुछ बोलती नहीं थी। जब भगवानदास तक यह बात पहुँची तो बहन का हालचाल पूछने उसकी ससुराल चला गया। दोपहर का भोजन करने के पश्चात् भगवानदास ने खाली थाली मकान के भीतरी स्तम्भ (शहतीर) को उठाकर उसके नीचे दबा दी और सभी घर वालों को चुनौती दे कि इस थाली को कोई अकेला या सभी मिलकर शहतीर के नीचे से निकाल कर दिखा दो। जब वे ऐसा नहीं कर सके तो उसने अपनी बहन को बुलाया और उससे शहतीर के नीचे दबी थाली निकालने को कहा। भाई का संकेत मिलते ही बहन ने देखते–देखते शहतीर उठाकर थाली को पैर से ठोकर मार कर निकाल दिया। तब भगवानदास ने बहन की ससुराल वालों से कहा जिसे तुम कायर, कमजोर समझकर धमकाते–मारते हो वह अपनी आई पर आ जाये तो तुम सब पर भारी पड़ेगी। जिस शर्म, हया से वह चुप रहती है उसे समझने की कोशिश करो। शोरम के पंचायती रिकॉर्ड में भी ऐसी अनेक वीरांगनाओं का उल्लेख मिलता है जो निरामिष भोजी अर्थात् शाकाहारी थी और बाकायदा रणभूमि में उतर कर अपनी जौहर दिखाती थीं। वीरांगना भागीरथी देवी के नेतृत्व में अठाइस हजार वीरांगनाओं की एक पंचायती सेना का गठन हुआ था। इसमें २२ हजार विवाहित और ६ हजार अविवाहित वीरांगनाएँ थीं। इस सेना की दस टुकड़ियों की कमान मोहिनी, बड़कोर, विशनदेई, सहजो, कृपी, निहालदे, सुन्दर कुमारी, रंजना, चन्दनकौर और नाहरकौर ने संभाली थी। विश्वविजेता सिकन्दर भी एक भारतीय वीरांगना के भाले से घायल होकर अन्ततः मौत का शिकार हुआ था। भागती हुई गाय, भैंस के रस्से पर पाँव रखकर उन्हें रोकने के कारनामें हरियाणा की अनेक महिलाएँ दिखाती रही हैं। ये सभी शाकाहारी रही हैं।

अंग्रेजों ने शाकाहारी व माँसाहारी पहलवानों को लेकर एक परीक्षण बबीना छावनी में कराया था। उन्होंने ६० पहलवान शकाहारी और ६० पहलवान माँसाहारी छाँटे। वजन के अनुसार उनकी जोड़ी मिलाई और तैयारी के लिए एक–दो महीने का समय दिया। निश्चित तिथि पर जब पहलवानों का दंगल हुआ तो उन साठ जोड़ों में ५१ कुश्तियां शाकाहारी पहलवान जीत गये तथा ६० वीं कुश्ती में वह जोड़ बराबर रही।

मा० चन्दगीराम और मेहरदीन के बीच १९६८ व १९६१ में हुई दो प्रसिद्ध कुश्तियाँ भला किसे याद न रहेंगी। मा० चन्दगीराम विशुद्ध शाकाहारी और मेहरदीय माँसाहारी था। मेहरदीन वजन में भी १६० पौंड अधिक था। मा० चन्दगीराम उस भीमकाय पहलवान के आगे बालक से लगते थे अतः किसी को भी उनसे किसी चमत्कार की आशा नहीं थी यद्यपि वह १९६२ व १९६८ में दो बार हिन्द केसरी विजेता बन चुके थे। जब दंगल शुरू हुआ तो दोनों में ३५ मिनट तक घोर संघर्ष हुआ। लेकिन मेहरदीन थक गया और अखाड़े में ही बेहोश होकर गिर पड़ा, स्वयं उठ भी नहीं सका, पहलवान रूपचन्द ने सहारा देकर उसे उठाया। यह पहली कुश्ती है जो १९६८ में हुई थी। दूसरी कुश्ती १२ मई, १९६१ को दिल्ली में ही हुई जिसके रैफरी थे विश्वविख्यात पहलवान दारा सिंह। जब दोनों पहलवान अखाड़े में उतरे तो दर्शकों को आशंका थी कि कि पहलवान मेहरदीन पिछले वर्ष की हार का हिसाब चुकता करने के लिए पूरी तैयारी के साथ आया है अतः इस बार चन्दगीराम को पछाड़ कर रहेगा। लेकिन ७ मिनट ४५ सेकण्ड में ही मेहरदीन ने छूट मांग ली. कुश्ती लड़ने से इंकार कर अखाड़े से बाहर आ खड़ा हुआ। वह शरीर, मन, आत्मा सबसे पराजित हो चुका था। मांसाहार पर शाकाहार की यह दूसरी बड़ी जीत थी। मा० चन्दगीराम का मानना था कि शुरू के दस–पन्द्रह मिनट में माँसाहारी पहलवान से अपने को बचा लिया जाये तो कुश्ती जीतने की सम्भावना बढ़ जाती है क्योंकि शुरु में ही वह अपना पूरा दम–खम निकाल कर कुश्ती जीतने का प्रयास करता है। इसके बाद उसका दम जवाब देने लगता है, साँस फूलने लगती है। मा० चन्दगीराम की जीत का एक अन्य कारण था उनकी मजबूत पकड़ और रगड़ जो उनके मजबूत दम के कारण थी। यह मजबूत दम शाकाहार की ही परिणाम था। मेहरदीन यदि मांसाहारी न होता तो इतनी जल्दी कदाचित ही मैदान छोड़ने पर विवश न होता।

ऐसी ही एक कुश्ती झज्जर में मुस्लिम पहलवान कट्टा कसाई और निस्तौली निवासी ब्र. बदनसिंह के बीच हुई थी। बदन सिंह भी चन्दगीराम की तरह हल्का–फुल्का था और कट्टा कसाई के पिता ने उसे देखकर कहा था कि इस बालक को मरवाने के लिए क्यों ले आये? मेरे बेटे के जोड़ का पहलवान शुभराम भदानी वाला है, उसे लेकर आते। शुभराम चूंकि कुश्ती को तैयार नहीं था इसलिए उसके पिता जी ही ब्र. बदनसिंह को लेकर आये थे। कसाई कट्टा शुरू के १०–१५ मिनट खूब उछला–कूदा और बदन सिंह अपना बचाव करता रहा। फिर जैसे ही कट्टा कसाई का दम फूलने लगा ब्र० बदनसिंह ने उस अपना शिंकजा कस उसे चारो खाने चित्त दे मारा। कसाई पहलवान के पिता ने खुद ब्र० बदनसिंह को पगड़ी दी, छाती से लगाया और शबाशी दी। ऐसी सैकड़ों घटनाएं हैं जो सिद्ध करती हैं कि माँसाहारी की तुलना में शाकाहारी अधिक शक्तिशाली और दमदार होते हैं। जो ताकत दूध, घी, फल, सूखे मेवों और मोटे अनाज में है वह ताकत माँस, मछली, अण्डे में नहीं है। पहलवान सुशील कुमार ने कॉमन वेल्थ और ओलम्पिक गेम्स में अपनी शक्ति का लोहा मनवा कर इसी सत्य को फिर सिद्ध किया है।

शाकाहारियों की तुलना में माँसाहारियों को अधिक बुद्धिमान, कुशल, चतुर मानने की अवधारणा में भी कोई दम नहीं है। १९वीं शताब्दी के भारतीय पुनर्जागरण का श्रेय जिन महापुरुषों को दिया जाता है, उनमें शीर्षस्थ स्थान स्वामी दयानन्द सरस्वती को प्राप्त है जिन्होंने अपनी तार्किक बुद्धि से सभी सम्प्रदायों के दिग्गजों की बोलती काशी, पुणे आदि में हुए शास्त्रार्थों में बन्द कर दी थी। क्या अध्यात्म, क्या दर्शन, क्या धर्म, क्या संस्कार, क्या शिक्षा, क्या अर्थशास्त्र, प्रशासन और राजनीति सभी विषयों पर उनके मुखर चिन्तन से उन्नीसवीं शताब्दी में एक नई वैचारिक क्रान्ति का उदय हुआ जिसने भारतीय समाज को न केवल आलोड़ित किया बल्कि उसे एक प्रशस्त पथ पर भी ला खड़ा किया। कौन नहीं जानता कि स्वामी दायनन्द सरस्वती पूर्णतः निरामिषभोजी थे, शाकाहारी थे, योगी और ब्रह्मचारी थे। बीसवीं शताब्दी जिस महाधन के कारण अपने को गौरवान्वित महसूस करती है उसका नाम था मोहनदास कर्मचन्द गांधी, जिसे स्वामी श्रद्धानन्द ने महात्मा की उपाधि से नवाजा था। इसी युग पुरुष के नेतृत्व में स्वाधीनता आन्दोलन लड़ा गया और भारत स्वतन्त्र हुआ यद्यपि जिस प्रकार की स्वतन्त्रता उनकी अनुपस्थिति में मिली उससे वे हताश, दुःखी और उद्वेलित थे और इसके विरुद्ध बगावत का ध्वज बुलन्द करने की तैयारी को पूरी तरह सन्नद्ध थे कि इसी बीच उनकी जघन्य हत्या कर दी गई। महात्मा गाँधी भी आजीवन शाकाहारी रहे। भारत का प्राचीन इतिहास जिन भारतीय महापुरुषों को, विचारकों को, तत्त्वज्ञानियों को, दार्शनिकों को, योगियों को, ऋषि–महर्षियों को संतों महंतों को, साधु–सन्यासियों को श्रद्धा, सम्मान, निष्ठा और गौरव से स्मरण करता है वे सभी के सभी शाकाहारी थे और उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का लोहा आज तक माना जाता है, उन्हें अपना आदर्श मानता है। विधिवेत्ता मनु० विदुर, चाणक्य को कोई कैसे भुला सकता है? सुश्रुत, चरक, धनवंतरी सरीखे चिकित्सा शासस्त्रियों को भुलाना क्या आसान है?

विवाह संबंध निकट संबंधियों से दूर हो या पास

—दयाराम पोद्दार

विश्व के सभी देशों में सभी मतों के लोगों में विवाह सम्बन्ध का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रश्न यह है कि विवाह का अर्थ क्या है? वस्तुतः विवाह शास्त्र सम्मत सामाजिक विधान है। विवाह में नर–नारी पारस्परिक सुख–सुविधा और गृहस्थाश्रम के कर्तव्यों का पालन करने के लिए दपत्ति के रूप में एक दूसरे के उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए सन्तानोत्पत्ति द्वारा मानव समाज की अभिवृद्धि में अपना महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। हिन्दू धर्म शास्त्रों में इसे पाणिग्रहण संस्कार भी कहते हैं। इसका अर्थ है, नर–नारी द्वारा एक दूसरे का उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हाथ पकड़ना या परस्पर सहारा प्रदान करना होता है। समाज द्वारा सम्पन्न हुए विवाह को कानून सम्मत भी माना जाता है। विवाह होने से नर–नारी को साथ–साथ रहने का कानूनी और सामाजिक अधिकार स्वतः प्राप्त हो जाता है। विवाह के पूर्व स्त्री–पुरुष का साथ–साथ रहना अधिकतर देशों के सभी समाजों में नैतिक दृष्टि से अच्छा नहीं माना जाता है, पर पाश्चात्य देशों में अब विवाह के बिना भी नर–नारी साथ–साथ रहकर इच्छानुसार सन्तान उत्पन्न करते है और इसमें वहां का कानून और समाज बाधक नहीं बनता है। फ्रांस में तो समलैंगिक सम्बन्ध (पुरुष का पुरुष से और स्त्री का स्त्री से शारीरिक संबंध) को भी कानूनी मान्यता प्राप्त है पर विश्व के अन्य देशों में समलैंगिक विवाहों को कानूनी मान्यता प्राप्त नहीं है और न ही इसे लोग अच्छा समझते हैं, पर फिर भी इसका प्रचार बढ़ रहा है। ऐसे विवाहों में येन–केन प्रकारेण विकृत यौन संतुष्टि की भावना ही प्रबल होती है।

वर्तमान में बाल विवाह और अनमेल विवाह कम होते हैं पर पहले यह कुप्रथा बड़े पैमाने पर प्रचलित थी। वेदों और मनुस्मृति के साथ–साथ आयुर्वेद के सुप्रसिद्ध ग्रंथ सुश्रुत के अनुसार विवाह योग्य लड़के की न्यूनतम आयु २५ वर्ष या इससे ऊपर की होनी चाहिए और लड़की की आयु १६ से १८ वर्ष तक में से न्यून नहीं होनी चाहिए। भारतीय कानून के अनुसार लड़के और लड़की का विवाह योग्य उम्र क्रमशः २१ व १८ वर्ष है। अर्थवेद में ११.५. ५ के अनुसार ब्रह्मचारिणी कन्या द्वारा युवक पुरुष से विवाह करने का कथन विद्यमान है।

मनुस्मृति के तीसरे अध्याय में विवाह के संबंध में बहुत सी ज्ञानवर्द्धक बातें लिखी गयी हैं। मनुस्मृति के अध्याय ३ के श्लोक संख्या ६ और ७ में पर्याप्त आर्थिक सम्पन्नता के बावजूद निम्न दस कुलों में विवाह न करने का आदेश विद्यमान है (१) उत्तम क्रिया से हीन (२) उत्तम पुरुष का न होना (३) विद्वान विहीन कुल (४) शरीर पर बड़े–बड़े बाल वाले लोग, जिस कुल में (५) बबासीर (६.) राजयक्ष्मा (टी. बी.), (७) अग्निमंदता से आमाशय रोग (८) मिरगी की बीमारी, (९) श्वेत कुष्ठ और (१०) जिस कुल में गलित कुष्ठ रोग हो।

इसी प्रकार मनुस्मृति ३/८ व ९ के अनुसार पीले वर्णवाली, पुरुष से लंबी, चौड़ी बलवाली लड़की से विवाह का निषेध किया गया है। विवाह योग्य कन्या के लिए मनुस्मृति ३.५ के अनुसार जो स्त्री माता की छह पीढ़ियों में न हो और पिता के गोत्र में न हो, उसी से विवाह करना चाहिए। निकट संबंधियों में परस्पर वैवाहिक संबंध स्थापित नहीं करना चाहिए। उत्तर भारत के हिन्दू परिवारों में पुरुषों की सात पीढ़ियों और स्त्री की ओर से चार पीढ़ियों में शादी करने का रिवाज नहीं है। सिक्ख समाज और ईसाइयों के कतिपय पंथों में भी निकट संबंधियों में शादी नहीं होती है।

अमेरिका के कई प्रांतों और भारत में १९४४ के हिन्दू विवाह–अधिनियम के द्वारा कानून से भी ऐसी शादियां प्रतिबंधित हैं पर भारत में जहां पूर्व परम्परा से निकट संबंधियों में विवाह पूर्व प्रचलित है। वहां हिन्दू परिवारों में मामा–भांजी या ममा और बुआ के बच्चों में परस्पर शादी का रिवाज है और वहां इसे बुरा नहीं माना जाता है। तमिल में सास के लिए मामीयार शब्द का प्रचलन है जिसका अर्थ मामी होता है। वहां पत्नी अपने पति का अथन यानी बुआ की बेटा ही कहती है।

इस्लाम और जुडाइस्म में ऐसी शादियों के प्रति आम सहमति है। ऐसी स्थिति में प्रश्न यह उठता है कि क्या विवाह संबंध निकट संबंधियों में होना चाहिए या दूर–दूर के संबंधों के विवाह में विज्ञान का दृष्टिकोण क्या है? पाश्चात्य समाज की तरह हिन्दू समाज के लोगों में भी यह धारण व्याप्त है कि निकट रक्त संबंधियों के पुत्र शारीरिक और मानसिक दृष्टि से स्वस्थ नहीं होते हैं। उन्हें तरह–तरह के रोग भी होते हैं। विज्ञान की दृष्टि लोगों का इस विषय पर एक मत न होकर परस्पर विरोधात्मक रुख है। अतः यह आवश्यक है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इस विषय पर लगातार खोज की जानी चाहिए और उसके निष्कर्षों से सभी को परिचित कराया जाना चाहिए। जिस प्रकार वैज्ञानिक कृषि के क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न वनस्पतियों में संयोग कराकर बेहतर उत्पादन प्राप्त करता है उसी प्रकार भिन्न–भिन्न कुलों के भिन्न–भिन्न गोत्र के मेल से स्वस्थ संतानोत्पत्ति होती है।

हिन्दू राजाओं के राजघरानों में साम्पतिक कारणों से यह कुप्रथा है, वहां हम उन राजघरानों में स्वाभाविक उत्तराधिकारियों का अभाव पाते हैं। इससे यह प्रमाणित होता है कि निकट संबंधियों को भले ही समाज माफ कर दे पर प्रकृति माफ नहीं करती। निकट संबंध में शादी की कुप्रथा का आधार आदम और हव्वा की उत्पत्ति से फैला हो या निकट संबंध में बढ़ते हुए प्यार की अनर्गल मान्यता से जुड़ा हुआ हो या दक्षिण भारत के हिन्दू परिवारों में प्रचलित परंपरा के कारण हो, कुप्रथा तो कुप्रथा ही कहलायेगी। अतः लोगों को इसे जनहित में स्वतः त्याग देना चाहिए। १९वीं शताब्दी में नवजागरण के पुरोधा और आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानंद (१८२४–१८८३ ई.) ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश के चौथे समुल्लास में इस बात पर विभिन्न कारणों से जोर दिया है कि विवाह संबंध निकट रक्त संबंध में न होकर दूर संबंध में और दूर के स्थानों पर होने चाहिए। इसके लिए वे निम्नलिखित कारण बताते हैं–

१. निकट संबंध के बच्चों ने यदि बचपन में परस्पर खेलकूद और लड़ाई झगड़ा किया हो तो वे दोनों एक दूसरे के दोषों, और स्वभाव से परिचित होंगे। संभव है, उन्होंने एक दूसरे को नंगे भी देखा हो, ऐसी स्थिति में उनमें स्वाभाविक प्रेम नहीं होगा।

२. जैसे पानी में पानी मिलने से विलक्षण गुण नहीं होता, उसी प्रकार एक ही गोत्र या कुल में विवाह होने से धातुओं की अदला बदली नहीं होगी।

३. जैसे दूध में मिश्री और अन्यान्य पदार्थों के मूल से दूध में उत्तमता उत्पन्न हो जाती है, उसी प्रकार भिन्न–भिन्न कुलों में विवाह होना उत्तम है।

४. किसी विशेष में यदि कोई रोगी हो या कोई क्षेत्र विशेष रोग उत्पन्न करने वाला क्षेत्र हो तो दूर के स्थानों पर विवाह होने से वहाँ के लोग स्वतः निरोगी हो जाते हैं।

५. निकट संबंध में परस्पर सुख–दुःख की अनुभूति और परस्पर विरोध होने से झगड़े की ज्यादा संभावना होती है पर एक दूसरे से दूर रहने के कारण ज्यादा प्रेम होता है।

६. अपने क्षेत्र में अप्राप्त पदार्थों कर प्राप्ति भी दूर संबंध के कारण सहज रूप से उपलब्ध हो जाती है।

स्वामी दयानन्द ने निरुक्त ३/४ का प्रमाण उदृत करते हुए कहा है कि कन्या का नाम दुहिता के कारण से भी है क्योंकि इसका विवाह दूर होने से हितकर है, नजदीक रहने से नहीं।

७. नजदीक संबंध के कारण कन्या के पिता के कुल में निर्धनता में वृद्धि संभव है क्योंकि कन्या के बार–बार आने पर पिता को कुछ न कुछ देना पड़ेगा।

८. निकट स्थान पर होने वाले संबंध के कारण किसी भी पारिवारिक विवाद की स्थिति में उस झगड़े के शीघ्र समाप्त होने की संभावना कम हो जाती हे। अतः स्वामी दयानन्द ने निकट संबंधियों में विवाह के साथ–साथ

शेष पृष्ठ ६ पर

समस्त अव्यवस्था एवं भ्रष्टाचार का मूल नास्तिकता

–नवीन मिश्र

समस्त संसार के अधिकांश लोग ऐसा मानते हैं कि भारतवर्ष एक धार्मि देश है। हम भी यदि अपने देश पर दृष्टिपात करें तो ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे देश पर वर्ष पर्यन्त हर जगह, हर समय धार्मिक आयोजन होते रहते हैं। कहीं भी रात्रि जागरण कीर्तन, अखण्ड पाठ व तीर्थ यात्रा करते हुए लोगों को देखा जा सकता है। वास्तव में यदि ये कृत्य धर्म–कर्म होते तो इस देश में भ्रष्टाचार नहीं होता।

धर्म के विषय में महर्षि का वाक्य है कि ''यतोऽअभ्युदयनिःश्रेयससिद्धि स धर्मः'' अर्थात् धर्म वह आचरण है जिससे हामरे इस लोक तथा परलोक, दोनों का सुधार हो। धर्म का स्वरूप आन्तरिक था, जोकि पूर्णतः दिखावे में बदल चुका है। वास्तविकता तो ये है कि अधिकांश लोग धर्म एवं ईश्वर को जानते ही नहीं हैं। यदि ये लोग ईश्वर को जानते तथा मानते होते, तो ईश्वर (सर्वशक्तिमान) से सर्वाधिक भय होता तथा वे पाप कर्म (भ्रष्टाचार) से बचे रहते।

ईश्वर का क्या स्वरूप है? इसको आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने आर्यसभाज के प्रथम दो नियमों में स्पष्ट किया है। प्रथम नियम को समझकर हम ईश्वर के प्रति दृढ़ आस्थावन् होकर सच्चे ईश्वर–भक्त एवं आस्तिक बन सकते हैं।

इसी प्रकार द्वितीय नियम को समझकर तथा व्यवहारिक जीवन में अपनाकर हम भ्रष्टाचार एवं पाप–कर्म से बच सकते हैं। उदाहरणार्थ यदि हमने ये जान लिया कि ईश्वर एक सर्वव्यापक सत्ता है, तो उससे छुपकर चोरी, पापकर्म, भ्रष्टाचार आदि कैसे कर सकते हैं? वह सत्ता सर्वशक्तिमान् एवं न्यायकारी भी है अर्थात् उस सर्वशक्तिमान सत्ता (ईश्वर) की न्याय व्यवस्था एवं दण्ड व्यवस्था से कोई भी पापी या भ्रष्टाचारी बच नहीं सकता है। उस सर्वशक्तिमान् (ईश्वर) के विषय में आर्य मसाज के वैज्ञानिक संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने लिखा है–

व्यापक है जो जाल जगत् में, ईश्वर नियमों का चहुँ ओर।
करता लोक सकल है बस में, भाग न सकता चोर।।

जब कोई व्यक्ति जड़पूजा (मूर्तिपूजा) के रूप में ईश्वर की पूजा करता है तो वह उस सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान् सत्ता को एकदेशी एवं जड़ मान लेता है, फलस्वरूप ईश्वर का भय उसको नहीं रहता है और यदि भय होता भी तो ये तथाकथित धर्म के ठेकेदार, लोगों को मूर्ख बनाकर कहते हैं कि ये जाप करो या कराओ, गुझे गुरु मान लो, मैं आपके सम्पूर्ण पाप क्षमा करके ईश्वर से मिला दूंगा तथा लोग उनके बहकावे में आकर ईश्वर के स्थान पर गुरुओं को पूजने लगते हैं। वास्तविकता ये है कि आज ये गुरु ईश्वर के प्रतिद्वन्द्वी बने बैठे हैं। ये लोग तीर्थ यात्रा, जाप, अखण्ड पाठ, भागवत सप्ताह आदि की प्रेरणा देकर पाप–मुक्ति के उपाय बनाताते हैं था लोग धर्म–कर्म करने के बाद स्वयं को पाप–मुक्त मान बैठते हैं तथा पुनः भ्रष्टाचार आदि पाप–कर्म करते हैं उपर्युक्त धर्म–कर्म करने के बाद ये तीर्थ गुरु पास से मुक्ति का प्रमाण पत्र दे देते हैं।

जिस कर्म को करते समय आत्मा को लज्जा, भय और शंका की अनुभूति हो वे भ्रष्टाचार आदि पाप–कर्म ही हैं। ईश्वर की सत्ता को ठीक से नहीं जानने के कारण मनुष्य की आत्मा पाप–कर्म करते समय सर्वव्यापक सत्ता (ईश्वर) को भुला देता है, जिसके कारण समाज में आज सर्वत्र भ्रष्टाचार का बोलबाल है। देश के अनेक तथाकथित साधु, सन्त महात्मा, पण्डे, पुजारी, कथावाचक, संन्यासी एवं तीर्थगुरु आदि छल–कपट के माध्यम से भोली जनता को मूर्ख बनाकर करोड़ों रुपये की कमाई कर रहे हैं।

वेद प्रतिपादित ईश्वर का स्वरूप आर्यसमाज के प्रथम दो नियमों में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समझाया है। ये नियम इस प्रकार हैं–

वेद प्रतिपादित ईश्वर का स्वरूप आर्यसमाज के प्रथम दो नियमों में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समझाया है। ये नियम इस प्रकार हैं–

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

भ्रष्टाचार मुक्त भारत के निर्माण हेतु महर्षि दयानन्द के आस्तिकता सम्बन्धी आर्यसमाज के उपरोक्त दोनों नियमों को जन–जन को समझना एवं समझाना पड़ेगा। प्रथम नियम–समस्त सत्य विद्या अर्थात् वेद, और उससे पदार्थ विद्या का जो–जो ज्ञान होता है उस सबका, मूल परमेश्वर है। ईश्वर–प्रणिधान की स्थिति को प्राप्त करने के लिए इस प्रकार का आस्तिकता सिद्धान्त अन्यत्र दुर्लभ है। द्वितीय नियम को अच्छी तरह जानकर तथा उपासना काल एवं व्यवहार काल में अपनाकर हम एक सच्चे ईश्वर भक्त बन सकते हैं।

एक और विडम्ना है कि जो आर्यसामज ईश्वर के सत्य स्वरूप को प्रस्तुत करता है, उसके विषय में इन तथाकथित धर्म गुरुओं ने एक भ्रान्ति फैला रखी है कि आर्यसमाजी नास्तिक होते हैं। इन धर्म गुरुओं को उत्तर देने के लिए आर्यसमाज का प्रथम नियम ही काफी है। विचार करें कि नास्तिकता सच्चिदानन्द ईश्वर की उपासना है या जड़पूजा। वास्तव में भ्रष्टाचार का मूल जड़पूजा ही है जिसके कारण उस चेतना सर्वव्यापक ब्रह्म का भय लोगों को नहीं रहा है।

भ्रष्टाचार मुक्त भारत निर्माण हेतु प्रत्येक देशवासी को ईश्वर–भक्त बनाना होगा अर्थात् ऐसा ईश्वर–भक्त जो परमेश्वर की सर्वव्यापकता का अनुभव करते हुए भ्रष्टाचार (पाप–कर्म) करते समय न्यायकारी ईश्वर से डरे। अभी स्थिति कुछ इस प्रकार है–

''नर तुच्छ देखें तो पाप से रुक जाइ हैं।
सर्वत्र व्यापक ब्रह्म से पर मूढ़ नहीं सकुचाई हैं।।''

अर्थात् ५–६ वर्ष के बालक के बराबर भी ईश्वर का भय नहीं है। ईश्वर से भय तभी होगा जब हम ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को जानने का प्रयास करेंगें।

ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानने के लिए हमें महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को समझना एवं समझाना होगा क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती ही एक मात्र ऐसे संन्यासी हुए हैं जिन्होंने ईश्वर को जानने के लिए ही घर–परिवार छोड़ा था तथा जब तक सच्चे शिव के स्वरूप को जान नहीं लिया तब तक उन्होंने विश्राम नहीं किया। अन्त में वेद प्रतिपादित ईश्वर का सत्य स्वरूप समस्त संसार के समक्ष रख दिया। वेद के निम्नांकित मंत्र में ईश्वर को जीव का सखा बताया गया है–

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्न्यो अभिचाकशीति।।

अर्थात् जीवात्मा को परमात्मा का सखा बनने के लिए निर्विकार बनाना पड़ेगा और अपने सखा ईश्वर के गुण न्यायकारी, दयालु, निर्विकार, अभय, पवित्रता आदि को धारण करना पड़ेगा तब ईश्वर का सच्चा उपासक बनकर पाप–कर्म (भष्टाचार) आदि से बच सकेगा। आइए हम सब मिलकर ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानें, मानें तथा प्रचारित करें, तभी हमारा राष्ट्र भष्टाचार से मुक्त होकर आदर्श चरित्रान् राष्ट्र बन सकेगा। ये हमारी कोरी कल्पना नहीं है। कभी इस देश के सभी लोग सच्चे ईश्वर भक्त तथा वैदिक धर्मी हुआ करते थे तथा यहाँ के आर्य राजा अश्वपति सम्पूर्ण राष्ट्र के बारे में घोषणा करते हुए पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कहते थे कि–

''न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न च मद्यपः।
नानाहितानिर्ना विद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।।

अर्थात् मेरे सम्पूर्ण राज्य में एक भी चोर नहीं है, एक भी कंजूस नहीं है, एक भी व्यक्ति नशे का सेवन नहीं करता है, एक भी परिवार ऐसा नहीं, जहां दैनिक यज्ञ न होता हो। सम्पूर्ण राज्य में कोई भी मूर्ख नहीं है, एक भी व्यक्ति व्यभिचारी या व्यभिचारिणी नहीं है। आइए हम सब मिलकर पुनः वेदमार्ग पर चलते हुए व्यसन मुक्त एवं भ्रष्टाचार मुक्त भारत का निर्माण करें तथा ईश्वर के सच्चे सखा बनकर निर्भय होकर विचरें तथा देश को नास्तिकता से हटाकर आस्तिकता की ओर ले चलें और ये देश पुनः आर्य्यावर्त्त कहा जाए।

महर्षि दयानन्द–आर्यसमाज और हन्दी

–पं. शिवकरण दुबे 'वेदराही'

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द मात्र एक वैदिक ऋषि ही नहीं थे अपितु एक प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक एवं राष्ट्र निर्माता थे। जहाँ उन्होंने धार्मिक, आध्यात्मिक तथा समाज सुधार के क्षेत्र में अपनी दिव्य दृष्टि का आलोक बिखेरा वहीं राष्ट्रीयता के सभी मूल तत्वों को संगठित तथा क्रियान्वित करने का अथक प्रयत्न किया। भाषा, संस्कृति की एकता उनके क्रांति का मूलाधार थी। उनका मानना था ''एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर है। सब उन्नतियों का स्थान ऐक्य (राष्ट्रीय एकता) है। जहाँ भाषा, भाव में एकता आ जाए, वहाँ सागर में नदियों की भाँति सारे सुख एक–एक करके प्रवेश करने लगते हैं।'' उन्होंने राष्ट्र जागरण के लिए देश की भाषाओं का महत्व जानकर कलकत्ता प्रवास के समय बंगाली केशव चन्द सेन के सुझाव पर हिन्दी भाषा को अपने सम्प्रेषण का आधार बनाया क्योंकि हिन्दी एक जनभाषा के साथ–साथ साहित्यिक भाषा के रूप में विकसित हो चुकी थी। उन्होंने इस तथ्य को समझा कि समूचे राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने के लिए लोक प्रचलित हिन्दी भाषा ही उपयुक्त होगी। उन्होंने सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना की और लेखन की प्रेरणा दी। स्वयं उन्होंने गुजराती और संस्कृत का लोभ छोड़कर अपना ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' हिन्दी में लिखा। उस युग में स्वामी दयानन्द की हिन्दी में गद्यात्मक ग्रंथ लिखना, वेद भाष्य करना तथा हिन्दी में प्रवचन करना ऐतिहासिक दृष्टि से युगान्तकारी था। अहिंदी भाषी होते हुए भी स्वामी जी ने हिन्दी को सम्पूर्ण देश की भाषा बनाने का क्रियात्मक प्रयास किया। स्वामी जी ने अपने पूना प्रवचन में कहा था कि हिन्दी द्वारा समस्त विश्रृंखलित भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है, स्वामी जी हिन्दी को 'आर्य भाषा' कहते थे। लाहौर में समाज के संगठन के दौरान स्वामी जी ने एक उपनियम बनाकर सब आर्य समाजियों के लिए हिन्दी सीखना आवश्यक कर दिया था। सन् १८७४ में स्वामी जी को हिन्दी में प्रवचन करते रेखकर श्री जवाहर दास जी ने, जो मथुरावासी थे, कहा कि स्वामी जी आपको तो संस्कृत में बोलना चाहिए' इस पर स्वामी ने उनको समझाया कि लोकभाषा में उपदेश देने से मनुष्यों का अधिक हित होता है। हरिद्वार में एक दिन स्वामी दयानन्द अपने आसन पर बैठे–कुछ समझा रहे थे, बीच में एक सज्जन ने निवेदन किया ''यदि आप अपनी पुस्तकों का अनुवाद कराकर फारसी में छपवा दें, तो पंजाब आदि प्रांतों में जो लोगग नागरी अक्षर नहीं जानते उनको आर्य धर्म जानने में बड़ी सुविधा हो जाय।'' इस पर स्वामी जी ने उत्तर दिया कि अनुवाद तो सिर्फ विदेशियों के लिए हुआ करता है नागरी अक्षर थोड़े ही दिनों में सीखे जा सकते हैं आर्य भाषा का सीखना कोई कठिन काम नहीं है। जो इस देश में उत्पन्न होकर अपनी भाषा सीखने में कुछ परिश्रम नहीं करता, उससे और क्या आशा की जा सकती है। आप तो अनुवाद की सम्मति देते हैं परन्तु दयानन्द के नेत्र तो वह दिन देखना चाहते हैं कि जब कश्मीर से कन्याकुमारी तथा अटक से कटक तक नागरी अक्षरों का ही प्रचार होगा। मैंने आर्यावर्त्त भर में भाषा का ऐक्य सम्पादन करने के लिए ही अपने सफल ग्रंथ आर्य भाषा में लिखे और प्रकाशित कराये हैं। स्वामी जी ने हिन्दी का स्वयं प्रयोग ही नहीं किया अपितु अपने सहयोगियों से वे हिन्दी में ही पत्राचार के लिए कहते थे। १४ अगस्त, १८८२ को दयानन्द स्वामी ने लाला कालीचरण जी को पत्र में लिखा कि आप लोग जहाँ तक हो सके आर्य भाषा को राज कार्य में प्रवृत्त कराने हेतु शीघ्र प्रयत्न कीजिए। स्वामी जी ने श्याम जी कृष्ण वर्मा को पत्र लिखा कि ''अंको को बांधकर नागरी में लिखाना''। इस उद्धरणों से स्वामी जी की हिन्दी के प्रति निष्ठा और दूरदर्शिता झलकती है। स्वामी जी के प्रयास का प्रतिफल था कि उनके परवर्ती खड़ी हिन्दी के जन्मदाता कहे जाने वाले भारतेन्दु ने हिन्दी के प्रचार–प्रसार का महान् कार्य किया। वे महर्षि के नवजागरण से प्रभावित थे तथा उनकी रचनाओं में सत्यार्थ प्रकाश का भी सीधा असर दिखायी पड़ता था। हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखा है ''भारतेन्दु युग सामाजिक सुधारों तथा जन–जागरण का युग था। भारतेन्दु की रचनाओं में स्त्री शिक्षा, वर्ण भेद त्याग, अनमेल विवाह निषेध, आदि विषय मिलते हैं। ''भारत दुर्दशा'' नाटक में तत्कालीन सामाजिक दशा पर प्रकाश डाला गया है–

''जाति अनेकन करी, अरू ऊँच बनायो।
खान–पान संबंध सबन सौं बरजि छुड़ायो''

हिन्दी के महत्व पर लिखा उनका दोहा अति प्रचलित है 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल''। स्वामी जी से प्रेरणा प्राप्त कर अनेक परवर्ती महापुरुषों ने हिन्दी के प्रचार प्रसार को गति प्रदान की जिसके परिणाम स्वरूप सन् १९४९ को संविधान सभा ने हिन्दी को भारत संघ की 'राज भाषा' का दर्जा दिया। भारत सरकार (राजभाषा विभाग) की पत्रिका 'राज भाषा भारती'' के एक लेख में आचार्य क्षेमचन्द सुमन लिखते हैं ''स्वातन्त्रय पूर्व पंजाब का तो हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि में अप्रतिम योगदान था। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के द्वारा प्रवर्तित आर्यसमाज के सुधारवादी आन्दोलन के कारण वहां हिन्दी का जो प्रचार–प्रसार हुआ उसने वहां की जनता को हिन्दी लेखन की ओर प्रेरित किया। हिन्दी का जो प्रचार–प्रसार हुआ उसने वहां की जनता को हिन्दी लेखन की ओर प्रेरित किया। हिन्दी के प्रमुख कथाकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, सुदर्शन, यशपाल, मोहन राकेश तथा श्रीमती रजनी पणिकर इसी प्रान्त की देन हैं।'' हिन्दी के मूर्धन्य पत्रकार श्री बाल मुकुन्द गुप्त, माधव प्रसाद मिश्र भी पंजाबी थे। महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने ''सत्धर्म प्रचारक'' नामक पत्र के माध्यम से हिन्दी भषा की अभिवृद्धि में योगदान किया, वहीं गुरूकुल कांगड़ी जैसी संस्था ने हिन्दी के अनेक विद्वान् और पत्रकार दिए। गुरूकुल में प्रशिक्षित प्रो० इन्द्र देव विद्यावाचस्पति, सत्यव्रत सिद्धांतालंकार, भीमसेन विद्यालंकार, धर्मदेव विद्यामर्त्तण्ड तथा चन्द्रगुप्त वेदालंकार जैसे अनेक यशस्वी लेखक और पत्रकार आर्य समाज ने दिए। महात्मा हंसराज, लाला लाजपत राय तथा लाला देवराज की डी.ए.वी. कालेज, नेशनल कॉलेज आदि शिक्षण संस्थाओं का हिन्दी की अभिवृद्धि में प्रचुर योगदान था। देश के महान् स्वतंत्रता सेनानी गणेश शंकर विद्यार्थी ने सन् १९३० को गोरखपुर के अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के १९वें अधिवेशन के अध्यक्ष पद से बोलते हुए कहा था 'स्वामी दयानन्द, आर्य समाज और गुरूकुलों ने हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने में बड़ा काम किया'' (राजभाषा भारती)। आर्य जगत् के वयोवृद्ध क्रांतिकारी लेखक श्री संतराम बी.ए. जी के विचार उनकी जीवनी ''मेरे जीवन के अनुभव'' से उद्धृत है'' मेरे अन्दर राष्ट्रीय भावना जागृत हुई तो मैंने हिन्दी सीखी। इस विषय में मुझे महर्षि दयानन्द से प्रेरणा मिली है। मेरी धारणा है कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। यह समूचे राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँध सकती है।'' आर्य समाज की विचारधारा के प्रचार का माध्यम हिन्दी है।

पृष्ठ ४ का शेष

विवाह संबंध निकट ...

स्थानीय संबंध करने का निषेध किया है।

शतपथ ब्राह्मण १४/४/११/२ के अनुसार भी जैसा प्रेम परोक्ष पदार्थ से होगा वैसा प्रेम प्रत्यक्ष मिलने वाले पदार्थ से नहीं होगा। जैसे किसी के केसी पदार्थ का नाम सुना हो पर उसा रसास्वादन करने का मौका न मिला हो या किसी परोक्ष वस्तु की प्रशंसा सुनकर मिलने की उत्कृष्ट इच्छा होती है वैसे ही दूरस्थ स्थानों पर अपने गोत्र और माता के कुल में निकट संबंध के युवक और युवतियों में परस्पर विवाह संबंध नहीं होने चाहिए।

भारतीय परम्परा में तो यदि कोई–कोई भी किसी भी किसी को भाई या बहन कह देता है तो उसके प्रति मन में कलुषित भावना नहीं आती ऐसी स्थिति में ममेरी या मौसेरी बहनों से विवाह का विचार ही बड़ा वीभत्य है। इस कुरीति को लोग जितना शीघ्र परित्याग करें, उतना ही यह सभी के लिये श्रेयष्कर व हितकर होगा।

काशी शास्त्रार्थ सम्मेलन

दिनांक 11, 12 एवं 13 अक्टूबर 2019 से

आपको जानकर हर्ष होगा कि दिनांक ११, १२ एवं १३ अक्टूबर २०१६ को वाराणसी में अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन के रूप में वृहद अयोजन है आप अभी से आने का संकल्प कर लें तथा प्रदेश की आर्य समाजें इन तिथियों में कोई भी कार्यक्रम न रक्खें आप सभी महानुभाव से निवेदन है कि अपने ईष्ट मित्रों सहित महासम्मेलन में भाग लेकर सम्मेलन को सफल बनायें।

राष्ट्र रक्षा यज्ञ करके देश में खुशहाली और समृद्धि की कामना से आहुतियां दी और दीक्षा के साथ बुराईयां छोड़ने का संकल्प लिया

गढ़मुक्तेश्वर-२४ मई दीक्षा के साथ बुराईयाँ छोड़ने का संकल्प दिलाया गया आर्य वीर दल उ०प्र० के चल रहे शिविर में आर्यवीरों को आज प्रातः यज्ञशाला में दीक्षा प्रदान की गई गढ़मुक्तेश्वर के निकट गुरूकुल पूछ में १६ मई से चल रहे शिविर में आज प्रातः गुरूकुल पूठ के संचालक स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने सभी आर्यवीरों को दीक्षा देते हुए प्रतिज्ञा कराई और यज्ञोपवीत प्रदान किये स्वामी जी ने बताया कि यह उपनयन संस्कार बालक का दूसरा जन्म होता है यह बुराईयों से बचाकर अच्छाईयों की ओर प्रेरित करता है आयु, बल, तेज बढ़ाता है यह माता-पिता देव तथा ऋषियों के ऋण से उऋण होने की प्रेरणा और कर्त्तव्यों की याद दिलाता है इस संस्कार से मन बुद्धि की पवित्रता बढ़ती है शुद्ध आहार, शुद्ध व्यवहार, शुद्ध आचार के लिए जो नियम हैं वे बताये गए और यज्ञ में आहुतियां देकर संकल्प कराया गया जिला सभा हापुड़ के प्रधान श्री बाबू सुरेन्द्र सिंह आर्य ने सभी आर्यवीरों को आशीर्वाद दिया आचार्य राजीव जी ने सत्कर्मों से मनुष्य के जीवन का यश बढ़ता है उत्साह और विश्वास प्रसन्नता बढ़ती है आचार्य सुधीर कुमार जी ने यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए यज्ञ करने की प्रेरणा प्रदान की आचार्य दिनेश आचार्य मोहन दास तिवारी ने भी संकल्प शक्ति से व्यक्ति महान् बनता है प्रेरणा प्रदान की व्यायाम शिक्षक सुरेश आर्य जी ने सर्वांग सुन्दर, व्यायाम, जुड़ों करांटे रक्षात्मक व्यायाम सिखाया और योगासनों के विशेष अभ्यास कराये सभी आर्य वीरों ने माता-पिता की सेवा करने का तथा नशा छोड़ने का व्रत लिया और आहुतियां लगाकर प्रतिज्ञा की।

इस अवसर पर महेश आर्य, प्रदीप शास्त्री, ज्ञानेन्द्र चो० मुकुल आर्य रवीन्द्र आर्य, शिवकुमार शास्त्री, कुलदीप आचार्य तथा क्षेत्र से आये हुए अभिभावक मौजूद रहे समापन २६ मई रविवार को प्रातः १० बजे होगा। प्राचार्य राजीव जी ने बताया कि क्षेत्रीय विधायक श्री कमल सिंह मलिक जी की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। यज्ञ में भाजपा की भारी बहुमत से जीत होने पर राष्ट्र के लिए भी स्वामी जी ने विशेष आहुतियां प्रदान कर मंगल कामना बाधाई प्रदान की गई प्रभु शक्ति प्रदान करें।

-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, मंत्री

शुद्धि संस्कार

सूचित किया जाता है कि साबाज २४ वर्ष पिता मुन्नवार, पता ५०३/२३, बरोलिया डालीगंज लखनऊ, उ०प्र० ने अपना शुद्धि संस्कार कराके वैदिक धर्म को स्वीकार कर लिया है। दिनांक ०६.०५.२०१६ आज से उन्हें नये नाम राजीव आर्य से जाना व पहचाना जायेगा। हम उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

सूचना

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ

"जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ का वार्षिक निर्वाचन १६ जून २०१६ (रविवार) को ०४ बजे से नगर आर्यसमाज, रकाबगंज, लखनऊ में आयोजित किया गया है। अंतरंग सभा में सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि उपरोक्त निर्वाचन में वही आर्य समाज भाग ले सकेंगी जिनको "आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०" से मान्यता प्राप्त है और उनके द्वारा वहां पर अपनी समाज का अद्यावधिक शुल्क जमा किया जा चुका है। सभी आर्य समाजों से अनुरोध है कि अपनी-अपनी आर्यसमाज का चित्र शुल्क सहित दिनांक ०८.०६.२०१६ तक मंत्री, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के पास जमा करें। चित्र के साथ "आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०" में जमा किये गये अद्यतन शुल्क की रसीद की छाया प्रति संलग्न की जाये। सभी आर्य समाज से नामित सदस्य निर्वाचन में भाग लेने के लिए निर्धारित तिथि, समय एवं स्थान पर उपस्थित होने का कष्ट करें।"

निवेदक– मंत्री प्रबोध सागर जौहरी

सूचना

आर्य समाज की जगत्प्रसिद्ध संस्था आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) के वार्षिक निर्वाचन में डॉ० शिवकुमार शास्त्री २०१६-२०२० के लिए प्रधान निर्वाचित हुए हैं। उल्लेखनीय है कि डॉ० शिवकुमार शास्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के वर्षों तक गरिमा मण्डित पदों को सुशोभित कर चुके हैं।

—श्रीनिवास आर्य, मंत्री, आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार)

शोक संवेदना

२३ मई, २०१६ (बृहस्पतिवार) संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ के लिपिक श्री शैलेन्द्र सिंह पुत्र श्री गुरूदयाल, प्रसाद, निवासी नयापुरवा, बंधारोड लखनऊ का आकस्मिक निधन हो गया। श्री शैलेन्द्र सिंह, के माता-पिता एवं बड़ी बहन एवं छोटा भाई है। श्री शैलेन्द्र सिंह के निधिन पर संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ की ओर से उनकी आत्मा को शान्ति एवं शोक संतृप्त परिवारी जनों इस असहय दुःख को सहन करने की ईश्वर से प्रार्थना करती है। शैलेन्द्र सिंह बी.टेक का छात्र था। परमपिता परमात्मा उनकी आत्मा को शांन्ति प्रदान करे।

आर्य समाज

आर्य समाज दयानन्द पथ सदर मेरठ के १२५ वर्ष पूर्ण होने के ऐतिहासिक समापन कार्यक्रम अत्यंत श्रद्धा, उल्लास एवं समर्पण भाव से मनाया गया। कार्यक्रम के आरंभ में आर्य विद्वान डॉ० वेदपाल जी के ब्रह्मत्व में संपन्न अथर्ववेद पारायण यज्ञ में आर्य पुरोहितों आचार्य देव शर्मा, राजेन्द्र शास्त्री गोपाल शास्त्री ने अथर्ववेद के पावन मंत्रों के साथ सम्पन्न हुआ सस्वर पाठ करके वातावरण को पवित्र कर दिया। यजमानगण कुम-कुम, शद सुचाकर, कामिनी, करूण चौधरी नीशा, आशुतोष चौधरी, ने गोघृत एवं औषधि युक्त सामग्री की आहुति प्रदान कर वातावरण सुगन्धित कर दिया। आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री नरेश निर्मल एवं पं० कुलदीप आर्य ने मधुर भजनों की प्रस्तुति की।

प्रवेश प्रारम्भ

गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार

महान दार्शनिक एवं आर्य-जगत के आर्य-संन्यासी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती महाराज द्वारा सन् १९०७ ई. में स्थापित आर्य-जगत की सुप्रसिद्ध शिक्षण संस्था गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) प्राचीन काल से वैदिक संस्कृति, सभ्यता एवं संस्कारों की संवाहिका रही है। आज भी यह संस्था आर्य सिद्धान्तों तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों का अनुगमन करती हुई अबाध गति से संचालित हो रही है। अभिभावकों से निवेदन है कि अधिकाधिक अपने बालकों को शिक्षणार्थ गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) में प्रविष्ट कराने का कष्ट करें। आइये! गुरूकुल में बालकों को प्रविष्ट करायें और संस्कारवान, विद्वान, बलवान और आचारवान बनायें। गुरूकुल की निम्नलिखित परीक्षाएँ शासन द्वारा मान्यता प्राप्त हैं।

प्रवेश शुल्क - रू० ६०००/- (रुपये छह हजार) मात्र पहली बार इसके अतिरिक्त भोजन व्यय रू० १७००/- मासिक, पुस्तकें, ड्रेस, बिस्तर का वार्षिक प्रबन्ध अभिभावक को करना होगा। आवासीय एवं शिक्षा निःशुल्क प्रदान की जाती है।

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

अन्तरंगाधिवेशन की सूचना

संस्था के पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है, कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, (नारायण स्वामी भवन), 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ की आगामी अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक– 09 जून, 2019 दिन रविवार तद्नु ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी को पूर्वाह्न 11.00 बजे से संस्था प्रधान–डॉ0 धीरज सिंह की अध्यक्षता में महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़तल्ला, नैनीताल में सम्पन्न होगी, जिसमें आप सभी की उपस्थिति प्रार्थनीय एवं अनिवार्य है।

प्रवेशनीय विषयगत एजेण्डा पंजीकृत डाक द्वारा सभी पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को भेजे जा रहे हैं।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती- सभा मंत्री

ईमानदार विद्यार्थी

विकास आर्य

यह बात १६ अगस्त १९४७ की है। मेरे पिता के एक मित्र श्री सिंह, जो पोस्ट ऑफिस में डिवीजनल इन्सपेक्टपर कार्यरत हैं, १६ अगस्त को करीब नौ बजे रात को प्रधान डाक घर से अपने घर मोटर साइकिल से जा रहे थे। वे अपना हैण्डबैग मोटर साइकिल के पीछे कैरियर से दाबे हुए थे श्री सिंह जब अपने घर पहुंचे तब देखते है कि कैरियर में हैण्डबैग नहीं है। वे बहुत चिन्तित हुए और फौरन मोटर साइकिल पर सवार हुए और पूरे रोड को देखते हुए वापस पहुँचे लेकिन हैण्डबैग नहीं मिलने से शोक में वे रातभर सो नहीं पाये और सुबह होते ही हमारे आवास पर पहुंचे। उन्होंने सारी बातें हमारे पिता जी से कह सुनायीं। हमारे पिता जी एक रिटायर्ड पोस्टल ऑफिसर हैं और श्री सिंह के शुभचिन्तक भी। मेरे पिता जी सारी बातें सुनकर मुझे खबर करने मेरे पास आये और बोले कि श्री सिंह तुम्हें खोज रहे हैं। मैं फौरन उनसे मिलने पहुँचा। श्री सिंह बहुत उदास थे। श्री सिंह बोले–'मेरा बैग कल नौ बजे रात को मोटर साइकिल से गिर गया। मैं पूरे शहर में लाउडस्पीकर से प्रचार करवाना चाहता हूँ।' मैं तुरन्त तैयार हो गया और पूरे शहर में प्रचार में करीब चार घण्टे लगे, लेकिन हैण्डबैग का कहीं भी पता नहीं चला।

श्री सिंह बहुत निराश होकर बोले– 'अब तो भगवान् ही है।' 'क्या आप ही जमीदार सिंह हैं? एक अपरिचित व्यक्ति ने उनसे उस समय पूछा जिस समय श्री सिंह अपने दरवाजे पर स्नान कर रहे थे। 'हाँ मेरा ही नाम जमदार सिंह हैं 'श्री सिंह बोले। आगन्तुक ने पूछा –'क्या आपका ही हैण्डबैग खो गया है? कल मैंने हैण्डबैग खो जाने का प्रचार सुना, वह हैण्डबैग मुझे परसों रात को रास्ते पर गिरा पड़ा मिला। क्या आपका हैण्डबैग यही है?, श्री सिंह से बोला – 'देख लीजिऐ, आपका सामान सुरक्षित है न! श्री सिंह ने हैण्डबैग हाथ में लेते हुए भगवान हो लाख, लाख धन्यवाद दिया और बोले हाँ–हाँ सुरक्षित है।' उस हैण्डबैग में एक लुंगी, एक राइफल का लाइसेंस, रेलवे का मोतिहारी से बेतिया तक का मासिक टिकट, फोटो सहित एक सौ रूपये तथा बहुत जरूरी सरकारी कागजात थे। सभी सामानों के साथ हैण्डबैग पाकर श्री सिंह की खुशी का ठिकाना न रहा। श्री सिंह ने सौ का एक नोट उस अपरिचित व्यक्ति को इनाम के तौर पर देने के लिए हाथ बढ़ाया। उस व्यक्ति ने सौ का नोट हाथ में न लेते हुए कहा–सर, यह तो मेरा कर्तव्य था। मैं एक विद्यार्थी हूँ।'

–कल्याण पत्रिका से साभार

ओ३म्

महर्षि दयानन्द गुरुकुल पूठ महाविद्यालय गढ़मुक्तेश्वर, हापुड

उ.प्र. में प्रवेश प्रारम्भ

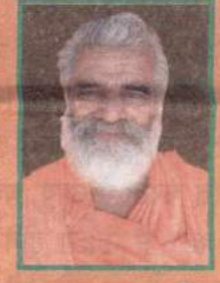

गढ़मुक्तेश्वर गंगा किनारे प्राचीन तीर्थ गुरुद्रोणाचार्य की तपस्थली गुरूकुल पूठ में नवीन सत्र के प्रवेश प्रारम्भ हो रहे हैं। शान्त एकान्त वातावरण में न्यूनतम कक्षा ५ उत्तीर्ण छात्रों का प्रवेश होगा ६, ७ एवं ८ उत्तीर्ण भी प्रवेश होगें प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर ही मान्य होगा शीघ्रता करें उ०प्र० मा०सं०शि० परिषद् लखनऊ से मान्यता है शिक्षा आर्य वीर दल का प्रशिक्षण भी होता है। शिक्षा निःशुल्क है मात्र छात्रावास व्यय ही लिया जायेगा।

दिनेश, आचार्य ९४११०२९७७५ | राजीव, प्राचार्य ९४१०६३८४४४ | स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती संचालक, मो. ९८३७४०२१६२

ओ३म्
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
के तत्वावधान में

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी के सानिध्य में

दिनांक ०७, ०८, ०९, १० जून २०१९ दिन- शुक्रवार, शनिवार, रविवार, सोमवार तक **"बृहद् योग शिविर का आयोजन"** किया जा रहा है तथा दिनांक **09.06.2019 रविवार** को आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों की अन्तरंग सभा की बैठक पूर्वाह्न ११.०० बजे से प्रारम्भ होगी जिसमें आप सादर आमंत्रित हैं

कृपया ईष्ट मित्रों सहित शिविर में भाग लेकर योग, भजन प्रवचन का लाभ उठायें।

स्थान- महात्मानारायण स्वामी आश्रम, रामगढ़ तल्ला, नैनीताल (उ०ख०)

डा. धीरज सिंह
प्रधान

अरविन्द कुमार
कोषाध्यक्ष

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री

नोट : योग शिविर में आने वाले महानुभावों से निवेदन है कि मौसम के अनुकूल हेतु वस्त्र और कम्बल अवश्य साथ लायें।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 2 जून से 16 जून 2019

स्थान :गुरुकुल शिवालिक अलियासपुर, अम्बाला (हरियाणा)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के अध्यक्ष डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी की अध्यक्षता आर्य वीर दल के अध्यक्ष डॉ० स्वामी देवव्रत सरस्वती जी की अध्यक्षता में शाखानायक, उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। प्रवेश शुल्क : शाखानायक : ५००/- रूपये, उप व्यायाम शिक्षक एवं व्यायाम शिक्षक के लिए ६००/- रूपये है (पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी) विस्तृत जानकारी के लिए संयोजक श्री रविन्द्र सिंह ९९९१७०००३४ से सम्पर्क करें।

–सत्यवीर आर्य, प्रधान संचालक, ९४१४७८९४६१

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।